International Journal of Home Science 2024; 10(1): 136-138

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2024; 10(1): 136-138
© 2024 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 10-01-2024
Accepted: 15-02-2024

कंचन माला
शोधार्थी, स्नातकोत्तर, गृह विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
कंचन माला
शोधार्थी, स्नातकोत्तर, गृह विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

महिला सशक्तिकरण एवं समाज (रामगढ़ जिला के संदर्भ में एक अध्ययन)

कंचन माला

सारांश
भारत में महिलाएँ अब सभी तरह की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति, सेवा क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि में हिस्सा ले रही हैं। इससे उनके सशक्तिकरण को पहचान मिलती है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को सशक्त अर्थात पूर्ण शक्तिशाली बनाना है जिससे वे अपने जीवन के हर फैसले स्वयं ले सके, परिवार, समाज एवं परिवेश मे इज्जत और अधिकार के साथ रह सके। अध्ययन का क्षेत्र झारखण्ड राज्य के नवसृजित जिला रामगढ़ को लिया गया था। तथ्य संकलन के लिए अनुसूची/प्रश्नावली, कुलश्रेष्ठ सामाजिक–आर्थिक स्थिति मानदंड से महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का आकंलन किया गया। शोध से महिलाओं की विविध तथ्य सामने आया है। लड़कियों को कोचिंग जाना उचित समझना, 70 प्रतिशत शहरी एवं ग्रामीण 50 प्रतिशत सहमत, प्रशासनिक क्षेत्र में जाने की लिए अच्छी पढ़ाई उचित है इस सम्बन्ध में 25 प्रतिशत शहर की एवं ग्रामीण 7.5 प्रतिशत सहमत थी। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में नारी शिक्षा मे भेद–भाव के तथ्य को प्रदर्शित किया गया है, नारी शिक्षा में कोई जाति या वर्ग विभेद है इस तथ्य से 75 प्रतिशत शहरी एवं 100 प्रतिशत ग्रामीण महिलायें सहमत थी।

कूटशब्दः महिला, समाज, सशक्तिकरण, आय वर्ग, शैक्षणिक वर्ग

प्रस्तावना
आधुनिक भारतीय समाज में नारी की स्थितियाँ एवं परिस्थितियाँ परिवर्तित हो चुकी है। प्राचीनकाल से मध्यकाल तक यद्यपि भारतीय नारी ने समाज को सुदृढ़ता प्रदान की किन्तु फिर भी उस समय वह शोषण एवं अत्याचारों से मुक्त नहीं हुई थी। दूसरी ओर महिलाओं के विरूद्ध अत्याचार एवं अपराधों में निरन्तर वृद्धि हो रही है, जो कि चिन्ता का विषय है। आज जरूरत है नारी को समय की मुख्य धारा से जोड़ने की। भारत में महिलाएँ अब सभी तरह की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति, सेवा क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि में हिस्सा ले रही हैं। इससे उनके सशक्तिकरण को पहचान मिलती है।
वर्त्तमान शोध का महत्व इन मुख्य पक्षों को ध्यान में रखकर महिला सशक्तिकरण का आकलन हैं। वास्तव में महिला के सशक्त होने से समाज का विकास सही दिशा में होगा। सामाजिक असमानता पारिवारिक हिंसा अत्याचार और आर्थिक अनिर्भरता– इन सभी से महिलाओं को छुटकारा पाना है तो जरूरत है महिला सशक्तिकरण की।
अतः इस शोध के माध्यम से इस महत्वपूर्ण पक्ष को चित्रित किया गया है। समाज के सामने वर्त्तमान समस्या एक महत्वपूर्ण पक्ष है इस शोध के माध्यम से समाज की एक इकाई के द्वारा समस्या का वर्त्तमान स्वरूप सामने आया है तथा अध्ययन के पश्चात् प्राप्त परिणाम द्वारा हम सही समीक्षा कर सके हैं तथा अध्ययन के दौरान प्राप्त, अनुभवों से अनेक सुझाव भी दिये गये हैं। भारत देश में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार यदि महिला श्रम में योगदान दे तो भारत की विकास दर दहाई की संख्या में होगी।

साहित्य समीक्षा
विप्लव (2013) महिला सशक्तिकरण से अभिप्राय महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक स्तर पर आत्मनिर्भर कर सशक्त करने से है। सशक्तिकरण केवल शक्ति का अधिग्रहण नहीं है वरन् यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से महिलाओं में इतनी जागरूकता उत्पन्न की जा सके कि वे स्वावलम्बी बनकर सामाजिक, आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त कर सकें।

राय, 2016 मनुस्मृति के अध्याय 3 के 56 वे श्लोक के सार मे नारियों को विशेष सम्मान दिये जाने की बात कही गई है। नारी देवी का रूप है, इसलिए उसकी पूजा होनी हीं चाहिए। वर्तमान परिवेश मे तथा 21 वीं शदी मे महिलाओं मे अनेक परिवर्तन हुए हैं, जिससे उनमे महत्वकांक्षा बढी है।

खाँ. (2017) महिलाओं के साथ दूर्व्यवहार अत्याचार, अश्लील हरकत मानसिक दबाव एवं किसी प्रकार का नाकारात्मक व्यवहार सभी महिला हिंसा के अर्न्तगत आते हैं। अध्ययनो ने इस तथ्य को सत्य प्रमाणित किया है।

रमा (2016) महिलाओं ने आज एक अलग –थलग परिचय समाज और राष्ट्र के सामने पस्तुत किया है। पुरूष प्रधान क्षेत्रों में भी महिलाये अपनी ज्वलंत चेतना प्रदर्षित कर रही है। विकास के सभी क्षेत्रों में अलग स्थान जैसे कला, खेल –कुद, समाजिक पहचान एवं प्रतिष्ठा, शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसंधान एवं अन्य क्षेत्रों में भी अपना स्थान बना रही है। महिलाओं ने अपने मर्यादों के साथ विश्व पटल पे सभ्यता का निर्वहन करते हुए, अपने संस्कृति की मानतायों को साथ घर एवं बाहर की जिम्मेवारी निभाने का प्रयास कर रही है। विश्व में महिलाओं के लिए विशेष आयोजन एवं सम्मेलन आदि मे जो महिलाये अपने अधिकारों का पक्ष एवं विशेष स्थान के लिए आवाज उठा रहीं हैं, उनके अन्दर की जागृति का दर्शाता हैं। इन आयोजनों के द्वारा महिलायें अपना खोया आत्म सम्मान पुनः पा सके और स्वाभिमान से जी सके तभी इसकी सार्थकता सिद्ध हो सकती है।

मित्तल (1993) ने अपने अध्ययन मे यह पाया कि भारतीय महिलायें हर क्षेत्र जैसे कार्य, भोजन, शिक्षा, रहन –सहन एवं अन्य क्रियाकलापों में भेदभाव का शिकार होती हैं।

कुमार (2003) ने अपने अध्ययन से यह मत रखा कि परिवेश में महिलाओं का हर प्रकार से हर क्षेत्र में सामाजिक–आर्थिक शोषण होता है। किन्तु अनेक प्रयासों के कारण आज शिक्षा के विकास से उनमें मनोबल बढा है, जिससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्र की महिलायें अब इस प्रकार भेद–भाव पूर्ण व्यवहार से बहुत हद तक छुटकारा पा रहीं हैं। परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में अभी भी शहरी क्षेत्र से कम जागरूकता आई है। ग्रामीण महिलाओं में विभिन्न उपायों से जागृति का प्रयास किया जा रहा है।

शोध प्राविधि

प्रस्तावित शोध अध्ययन का क्षेत्र झारखण्ड राज्य के नवसृजित जिला रामगढ़ को लिया गया था। रामगढ़ जिले के शहरी क्षेत्र के महिलाओं का चुनाव जो मध्यम आय एवं निम्न आय वर्ग तथा उच्च और निम्न शैक्षणिक वर्ग से आती है। कुल 240 महिलाओं को अध्ययन के अन्तर्गत इसमें लिया गया था। तथ्य संकलन के लिए, अनुसूची/ प्रश्नावली, कुलश्रेष्ठ सामाजिक–आर्थिक स्थिति मानदंड महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का आकंलन किया गया।

शोध का उद्देश्य

1. विभिन्न आय एवं शिक्षा वाले महिलाओं में सशक्तिकरण का अध्ययन।
2. प्रस्तुत शोध के लिए परिकल्पना।
3. आय एवं शिक्षा महिला सशक्तिकरण को प्रभावित करता है।
4. तथ्य विश्लेषणः– आंकड़ों या समंको का सारणीयन कर उनका विश्लेषण करके परिणामों का प्रस्तुतीकरण है।

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में नारी शिक्षा के तथ्यों का विवरण प्राप्त हुई, उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की सभी महिलाओं का विचार तर्कसंगत है, सभी नारी शिक्षा को उचित मानती हैं एवं उच्च शिक्षित होने से परिवार को आर्थिक लाभ भी मिलता है एवं परिवार में महिलायें पढ़ी–लिखी हों तो घर का संचालन भी बेहतर होता है।

महिलाओं के शैक्षणिक विकास मे विद्यालय से संबंधित तथ्यों का विवरण (शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र) यह निष्कर्ष निकलता है कि सिर्फ विद्यालय में उच्च शिक्षा संबंधी व्यवस्था की जानकारी शहरी की 75 प्रतिशत एवं ग्रामीण 50 प्रतिशत महिलाओं को ही विद्यालय में उच्च शिक्षा संबंधी व्यवस्था की जानकारी हैं, एवं 75 प्रतिशत महिलाओं को विद्यालय में शिक्षिका की जानकारी है। अन्य जानकारियों मे विद्यालय की जानकारी तथा विद्यालय मे बालिका शिक्षा की व्यवस्था की जानकारी सभी महिलाओं को 100 प्रतिशत था।

शोध से महिलाओं की विविध तथ्य सामने आया है। लड़कियों को कोचिंग जाना उचित समझने वाली में 70 प्रतिशत शहरी एवं ग्रामीण 50 प्रतिशत सहमत, प्रशासनिक क्षेत्र में जाने की लिए अच्छी पढ़ाई उचित है इस सम्बन्ध में 25 प्रतिशत शहर की एवं ग्रामीण 7.5 प्रतिशत सहमत थी। महिला शिक्षा सिर्फ ज्ञान के लिए होना चाहिए इस सम्बन्ध में 0 प्रतिशत शहरी एवं 25 प्रतिशत ग्रामीण महिलायें सहमत थीं। महिलाओं का सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में जाना चाहिये शहरी की 50 प्रतिशत एवं ग्रामीण 75 प्रतिशत सहमत थी। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में नारी शिक्षा मे भेद–भाव के तथ्य को प्रदर्शित किया गया है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बेटी के पढ़ लिख जाने पर देखना और घर की लड़कियों के विद्यालय जाने संबंधी जानकारी सभी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं को है, सिर्फ नारी शिक्षा पर प्रतिबंध, मत से कोई सहमत नही थी। नारी शिक्षा में कोई जाति या वर्ग विभेद है इस तथ्य ये 75 प्रतिशत शहरी एवं 100 प्रतिशत ग्रामीण महिलायें सहमत थी।

निष्कर्षः

अगर हम सचमुच में भारतीय महिलाओं को सशक्त देखना चाहते हैं तो सर्वप्रथम उनके समक्ष आनेवाली उपर्युक्त चुनौतियों को दूर करना होगा। उन्हें स्वच्छन्द रूप से पुरुषों के तरह शिक्षा का समान अवसर, रोजगार प्राप्त करने का समान अवसर और स्व–निर्णय का अधिकार देना होगा, जिससे कि वे आजादी के साथ अपने कार्यों को भी करे और जहाँ चाहे बेरोकटोक घूम सके। इसके लिए सरकार को भी कानून बनाने के साथ उसे सख्ती से लागू करना होगा और पुरुष वर्ग को अपने सोच में बदलाव लाना होगा।

विशेषकर मैं अपने अध्ययन क्षेत्र रामगढ़ के सन्दर्भ में भी कहना चाहती हूँ कि भारतीय संविधान के अनुसार पंचायती राज्य व्यवस्था के तहत मुखिया, सरपंच और पंच के बहुत से पद सुरक्षित हैं, जहाँ से महिलाएँ चुनाव जीतती हैं परन्तु उसके बावजूद उन महिलाओं के पति ही उनके कार्यों को करते हैं, और वे चुनाव जीत कर भी अपने अधिकार से वंचित हो जाती है। यह स्थिति महिला सशक्तिकरण की कार्य की बड़ी बाधाएँ हैं। रामगढ़ विधान सभा क्षेत्रों से महिला विधायिका चुनी गयी हैं जो रामगढ़ जिला के महिला सशक्तिकरण के इतिहास में निःसंदेह एक मील का पत्थर साबित होना चाहिए। जिला में स्वयं सहायता समूह, गैर सरकारी संगठन एवं विभिन राजनीतिक दलों की महिला संगठनों, सामाजिक संस्थाओं, शैक्षणिक संस्थाओं और सरकार द्वारा महिला उत्थान के लिए चलाए जा रहे विकास की योजनाओं और महिलाओं में अपनी खुद की स्थिति को सुधारने की प्रबल इच्छाशक्ति मन को एक सकुन जरूर देता है कि हमारे आने वाले कल में महिलाएँ स्व–निर्णय के साथ आत्मनिर्भर बनकर पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर देश और राष्ट्र के विकास के लिए अपने दायित्वों और कर्तव्यों का निर्वहन सशक्त रूप से करेगी।

संदर्भ

1. कुमार राज (2020 भारतीय नारी सामाजिक अध्ययन प्रहलाद स्ट्रीट अंसारी रोड नई दिल्ली, अर्जुन पब्लिसिंग हाउस पृ0 सं0 1
2. खाँ,आई.ए.2017, महिला अधिकार दशा एवं दिशा, रिमार्किंग एन एनालाइसेशन,वॉल्यूम –2(9) पृ.सं.–15,17

3. गजटकोष, एच0 एस0 और जी0 एच बाटमैन (1946), मेन एण्ड हंगर, इलिनोएस, ब्रदर्न पब्लिशिंग हाउस, पृ019
4. विप्लव (2013) महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम, राहुल पब्लिशिंग, मेरठ, प्रथम संस्करण पृ0 सं0 10
5. महिला विकास की प्रगति रिपोर्ट, महिला एवं बाल सोशल वेलफेयरस फरवरी, मार्च पृ0 सं0 2011
6. मित्तल एल0 एन0 (1993) : जेन्डर बॉयस ऐण्ड न्यूट्रीशन,
7. विश्व स्वास्थ्य संगठन 1997, 2000 ए संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष 1997, 2000
8. राय सरोज, 2016. वर्तमानशिक्षा में महिलाओं के संवैधानिक अधिकारोंकी आवश्यकता, रिव्यु ऑफ रिसर्च इंटरनेशनल ऑनलाइन मल्टी डिसीप्लीनरी जर्रल,वॉल्यूम –5 (5) ए.आई. एस.एस.एनः 2249:894 विभाग, जयपुर (2011)